

कॉम्पैक्ट सॉलिड स्टेट सेंसर

प्रिलमिस के लिये

धातु जल प्रदूषण, कॉम्पैक्ट सॉलिड स्टेट सेंसर

मेन्स के लिये

जल प्रदूषण के नियंत्रण में तकनीकी का प्रयोग, जल में वषिकृत धातुओं की उपस्थिति के दुष्प्रभाव

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारत के कुछ शोधकर्त्ताओं ने जल में उपस्थिति भारी धातु आयनों (Heavy Metal Ions) की पहचान के लिये एक 'कॉम्पैक्ट सॉलिड स्टेट सेंसर' (Compact Solid-State Sensor) के विकास में सफलता प्राप्त की है।

मुख्य बढि:

- कर्नाटक के बंगलूरु में स्थिति 'नैनो एवं मृदु पदार्थ वजिज्ञान केंद्र' (Centre for Nano and Soft Matter Sciences- CeNS) में शोधकर्त्ताओं की एक टीम ने एक 'कॉम्पैक्ट सॉलिड स्टेट सेंसर' के विकास में सफलता प्राप्त की है, जिससे जल में उपस्थिति भारी धातु आयनों जैसे- लेड (Lead) आयन (Pb^{2+}) की पहचान की जा सकती है।
- अध्ययन के दौरान देखा गया कि इस सेंसर के माध्यम से बहुत ही आसानी से जल में उपस्थिति भारी धातु आयनों की पहचान की जा सकती है, हालाँकि शोधकर्त्ताओं की टीम इस सेंसर की चयनात्मकता (Selectivity) में और अधिक सुधार का प्रयास कर रही है।

'नैनो एवं मृदु पदार्थ वजिज्ञान केंद्र'

(Centre for Nano and Soft Matter Sciences- CeNS):

- 'नैनो एवं मृदु पदार्थ वजिज्ञान केंद्र' भारत सरकार के वजिज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (Department of Science and Technology- DST) के तहत एक स्वायत्त शोध संस्थान है।
- यह संस्थान कर्नाटक की राजधानी बंगलूरु में स्थिति है।
- इसकी स्थापना वर्ष 1991 में प्रख्यात तरल क्रिस्टल वैज्ञानिक 'प्रो. एस. चंद्रशेखर' के द्वारा कर्नाटक में 'सेंटर फॉर लिक्विड क्रिस्टल रिसर्च' (Centre for Liquid Crystal Research) नामक वैज्ञानिक संस्था के रूप में की गई थी।
- वर्ष 2014 में इसके कार्य क्षेत्र में वृद्धि की गई तथा इसका नाम बदलकर 'नैनो एवं मृदु पदार्थ वजिज्ञान केंद्र' कर दिया गया था।
- इस संस्थान के शोध क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की धातु, सेमीकंडक्टर नैनोस्ट्रक्चर (semiconductor nanostructures), तरल क्रिस्टल, जैल, झलिलियाँ (Membranes) और हाइब्रिड मैटेरियल (Hybrid Material) आदि प्रमुख हैं।

कॉम्पैक्ट सॉलिड स्टेट सेंसर:

- इस सेंसर में लगी झलिली (Film) को एक ग्लास सबस्ट्रेट (Substrate) पर बने मैंगनीज़ डोपड ज़कि सल्फाइड क्वांटम डॉट्स (Manganese Doped Zinc Sulfide Quantum Dots) और रड्यूसड ग्राफीन ऑक्साइड (Reduced Graphene Oxide- RGO) के कंपोजिट पदार्थ के माध्यम से तैयार किया गया है।
- ये क्वांटम डॉट्स जल में घुलनशील हैं और उच्च फोटोल्युमिनेंस (~30%) क्वांटम दक्षता होने के कारण यह ल्युमिनेंस आधारित सेंसिंग के लिये सबसे उपयुक्त हैं।

- जैसे ही भारी धातु आयनों (पारा, सीसा, कैडमियम आदि) से युक्त जल सेंसर में लगी कंपोजिट फ्लिम के संपर्क में आते हैं, फ्लिम से होने वाला उत्सर्जन कुछ ही सेकंड में बुझ जाता है जिससे जल में भारी धातु आयनों की उपस्थिति की पुष्टि होती है।

लाभ:

- इस सेंसर में प्रयुक्त क्वांटम डॉट्स को हाथ में पकड़ी जा सकने वाली छोटी अल्ट्रावायलेट लाइट (254nm) के माध्यम से भी उत्तेजित/सक्रिय किया जा सकता है, जिसके कारण सुदूर क्षेत्रों में भी आसानी से इसका प्रयोग किया जा सकता है।
- यह सेंसर जल में उपस्थिति भारी धातु आयनों के सूक्ष्मतम कणों {0.4 पार्ट्स प्रति बिलियन (Parts Per Billion- ppb) तक} की पहचान करने में सक्षम है।
- जल में उपस्थिति भारी आयनों की उपस्थिति से होने वाले स्वास्थ्य नुकसान को देखते हुए लंबे समय से कुशल और आसानी से प्रयोग किये जा सकने वाले परीक्षण उपकरण की आवश्यकता बनी हुई थी ऐसे में इस उपकरण की सहायता से दूरस्थ क्षेत्रों में जल प्रदूषण की पहचान कर इसके निवारण के लिये आवश्यक कदम उठाए जा सकेंगे।

जल में भारी धातु आयनों की उपस्थिति के नुकसान:

- जल में एक नश्चित मात्रा से अधिक भारी धातु आयनों की उपस्थिति के स्वास्थ्य पर कई हानिकारक प्रभाव हो सकते हैं, क्योंकि ये बड़ी आसानी से शरीर में जमा हो जाते हैं और इन्हें किसी रासायनिक या जैविक प्रक्रिया से निकालना बहुत कठिन होता है।
- मानव शरीर में अधिक भारी धातु आयनों की उपस्थिति भ्रूणविकार और तंत्रिका तंत्र को प्रभावित कर सकती है, साथ ही इसके कारण रक्त की संरचना में परिवर्तन, फेफड़े, गुर्दे, यकृत और अन्य महत्वपूर्ण अंगों को नुकसान हो सकता है।
- लंबे समय तक कुछ विशेष भारी धातुओं या उनके यौगिकों के संपर्क में रहने से कैंसर जैसी बीमारियाँ भी हो सकती हैं।
- साथ ही प्राकृतिक जल स्रोतों जैसे- नदियों, झीलों में अधिक भारी धातु आयनों की उपस्थिति विन्य जीवों और प्रजातीय विविधता को क्षति हो सकती है।

भारी धातु आयन प्रदूषण के मुख्य स्रोत:

- अगस्त 2019 में 'केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय' (Ministry of Jal Shakti) द्वारा जारी 'स्टेटस ऑफ ट्रेस एंड टॉक्सिक मेटल्स इन इंडियन रिवर्स' (Status of Trace and Toxic Metals in Indian Rivers) के अनुसार, भारतीय नदियों में धातु प्रदूषण के कुछ प्रमुख स्रोत खनन, चरम शोधन, उर्वरक, कागज, बैटरी, वदियुत लेपन आदि से जुड़ी औद्योगिक इकाइयाँ हैं।
- औद्योगिक केंद्रों से होने वाला उत्सर्जन, नदियों या प्राकृतिक जल स्रोतों में औद्योगिक केंद्रों से छोड़ा जाने वाला हानिकारक दूषित जल और अपशिष्ट पदार्थ प्रदूषण में वृद्धि का एक बड़ा कारण है।
- इसके अतिरिक्त घरों से निकलने वाला गंदा पानी, कृषि उर्वरकों से होने वाला प्रदूषण, कचरे के बड़े ढेर से होने वाला रसाव और वाहनों से होने वाला उत्सर्जन भी बड़ी मात्रा में प्रदूषण में वृद्धि करता है।

आगे की राह:

- औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले अपशिष्ट को नदियों में छोड़ने से पहले उनका रासायनिक और जैविक परीक्षण किया जाना चाहिये।
- जल प्रदूषण से संबंधित कुशल और कड़े कानूनों तथा नियमों को लागू कर उनके अनुपालन को सुनिश्चित करने के लिये आवश्यक कदम उठाए जाने चाहिये।
- औद्योगिक केंद्रों और कृषि से होने वाले प्रदूषण तथा नदियों में हानिकारक प्रदूषण स्तर की नियमित निगरानी की जानी चाहिये।

स्रोत: पीआईबी